समय का इतिहास

नवभारत टाइम्स

मुम्बई, सोमवार, 4 दिसम्बर, 2006, मूल्य तीन रुपये

महानगर

चित्रों में सच, सपने और जीवन के रंग

4 नवभारत टाइम्स, मुम्बई, 4 दिसम्बर 2006

दूसरी ओर शुक्ला चौधुरी शांतिनिकेतन में पढ़ी हैं। बंगाल और गुरुदेव रवीन्द्र उनके तन-मन में बसे हुए हैं। चित्रकार के अलावा वे रवीन्द्र संगीत की गायिका भी है। शांतिनिकेतन से कला की बारीकियां तो उन्होंने लीं पर शैली नहीं। अमूर्त शैली उनके बचपन की धुंधली यादों के लिए ही ज्यादा सही है, वे मानती हैं। जैसे छत पर लेटे हुए खुले आकाश में चांदनी में बादलों और तारों की आंखमिचौली ने एक कैनवास को जन्म दिया या फिर बांस के घने जंगल में लगे पेड़ों से छन कर आती हुई रोशनी उनकी यादों से उतर कर चित्र में समा गयी है। ऐसी ही सब यादें जो अब सपना हो गई हैं, उनके काम का आधार हैं और फिनिक्स की तरह क्षीण होकर बार-बार जन्म लेती हैं।

छोटे मियां सुभान-अल्लाह!

नई पौध भी धमाल मचा रही है, भारतीय चित्रकारों की, जिनका कमाल देखने को मिला हांगकांग में जहां अंतरराष्ट्रीय नीलामघर क्रिस्टीज ने अपने हांगकांग ब्रांच के 20 साल पूरे होने पर एशियाई और चीनी समकालीन कला का ऑक्शन किया। 26 नवम्बर को हुई इस नीलामी में उभरते हुए तीन भारतीय चित्रकार जापानी, चीनी और कोरियाई समकालीनों से बाजी मार ले गये।

करीब 32 करोड़ की बिक्री में भारतीयों का बड़ा हिस्सा रहा जिनमें सबसे नये चित्रकार का नाम है अशीम पुरकायस्थ जिसका काम 'फेक एरर' 44 लाख में बिका। दूसरी प्रतिभा सामने आई बड़ोदा के एनएस हर्षा के रूप में जिसके 'मेल्टिंग विट' को भी 44 लाख मिले। तीसरे नम्बर पर रहे जयपुर में जनमे और मुम्बई में बसे बहुचर्चित युवा चित्रकार चिन्तन उपाध्याय। 'म्यूटेण्ट' शीर्षक उनका कैनवास 28 लाख के लगभग में गया। इस नीलामी में सुदर्शन शेट्टी, एन पुष्पमाला, सुबोध गुप्ता आदि भी कई प्रतिभासम्पन्न चित्रकारों ने अपने विवादास्पद काम से चमत्कृत किया और सफलता पाई।

मनमोहन सरल